सरदार तारासिंग गोरोवाडा के एकसष्ठी समारोह मे
ग्यानी बलवंतसिंघजी, सरदार संतसिंघ मोखा,
तारासिंग गोरोवाडा, बिंदुमाधव जोशी, शाहिर हेमंत मावळे

एकसष्ठी समारोह में शायर तारासिंग गोरोवाडा को स्मृतीचिन्ह प्रदान
करते हुए बिंदुमाधव जोशी, ग्यानी बलवंतसिंघजी, सरदार संतसिंघ मोखा,
शाहिर परिषद के अध्यक्ष शाहिर योगेश और शाहिर हेमंत मावळे

भारतीय जवानों की तरफ से तारासिंघ गोरोवाडा
की

मुशरफ को चेतावनी

शायर तारासिंघ गोरोवाडा 'जाचक'

मुर्शरफ को चेतावनी

(काव्य और शायरी)

सरदार तारासिंघ गोरोवाडा, 'जाचक'

- प्रकाशक -

सरदार तारासिंघ गोरोवाडा

स. नं. ३७/१२अ/ब,

धनकवडी, पुणे ४११ ०४३.

मोबा. ९८२२८ ६७७७८

कोमल एंटरप्राईजेस

स. नं. ३७/१७, विद्यानगरी,

जवाहर बेकरी शेजारी,

धनकवडी, पुणे ४११ ०४३.

मोबा. ८८०५४ ६५०२३

मल्हार प्रिंटर्स

७०८, घोरपडे पेठ,

घोरपडे उद्यान समोर,

पुणे ४११ ०४२.

सर्वहक्क -

लेखकाधीन

प्रकाशन -

डिसेंबर २०११

सप्रेम भेट

स्वर्गीय माताजी, माता इंदरकौर के चरणोंमें श्रद्धापुर्वक समर्पित

मनोगत

मैं शायर तारासिंघ गोरोवाडा 'जाचक' पाकिस्तान में जन्मा और भारत विभाजन के समय हम सीधा पुणे में आये। उस समय मेरी उमर करीब नौ साल की थी। पाकिस्तान से आते हुए हम सभी भाई तथा माताजी के पास अंग के कपडे सिवाय और कुछ नही था । मेरी बडी बहन जो पूना में रहती थी उसके अधार से हम पूना आये और आज तक सभी भाई हम पूना के नागरिक हैं। मेरी शिक्षा पूना में ग्यारवी (नॉन मॅट्रिक) तक हुई वो भी विवाह हे बाद । बचपन से ही मेरा गुरुद्वारे में आना जाना था धार्मिक विचारों का होने के कारण बचपन से ही धार्मिक विषयोंपर काव्य करने लगा। गुरुद्वारें में आनेवाले कवियों का जब विचार सुनता था तब मेरी भी इच्छा हुई की मैं क्यों ना काव्य रचना करूं?

बस तभी से मैं काव्य करने लगा।

सन १९६९ में हमारे बाडे में महाराष्ट्र शाहीर परिषद का दूसरा अधिवेशन हुआ तभी से मैं इस परिषद का सभासद हूं । दूसरे अधिवेशन में शाहीर किसनराव हिंगेजी अध्यक्ष थे । उन्ही दिनों में मैने पहिला मराठी काव्य ''ऊठ जाग शाहिरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला'' ये काव्य लिखा ।

महाराष्ट्र शाहीर परिषदने मुझे आज तक बहुत प्यार सन्मान दिया और मैने महाराष्ट्र परिषद के कई हुद्दो पे काम भी किया है । मैं महाराष्ट्र शाहीर परिषदके सभी सदस्यों का आभारी हूं ।

धन्यवाद,

आपका अपना,

तारासिंघ गोरोवाडा

जय भारत, जय महाराष्ट्र.

एक धर्म प्रचारक की समाज प्रबोधन के लिए शाहिरी.

सिख धर्म प्रचारक तारासिंह गोरोवाडा 'जाचक' की जनमानस में लोक प्रिय संत कबीर, नामदेव तथा सिख धर्म ग्रंथों के वाणी का तथा श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी का भानुवाद का मराठी भाषा मे श्री. विनायक लिमये के सहयोग से अनुवादित किया । इन ग्रंथों का परिचय हुआ । इन ग्रंथों द्वारा श्री. तारासिंह गोरोवाडाने समाज जागृती का जो बीडा उठाया है उसका मैं अभिवादन करता हूँ ।

मैं तब और भी अभिभूत हुआ जब उनकी कुछ शाहिरी रचनायें मेरे समक्ष रखी गईं । और उनकी प्रस्तावना लिखने का अनुरोध किया गया । उनकी शाहिरी रचनायें मैं पढने लगा और उनकी गहराई में खोता गया क्योंकी वे सिर्फ **संतों की वाणी, गुरुनानक की कहानी** या **मुशर्रफ को चेतावनी** नही थी बल्कि उसमे समाज के वास्तविकता का दर्शन कर एक आव्हानात्मक भावनायें भी थी । समाज एक है, देश एक है अर्थात हम सभी एक है और हमारा देश के प्रति एक दायित्व है उसका प्रभाव दिखा ।

गुरूनानक की अमर कहानी में तारासिंह लिखते हैं :-

''बडा जुल्म होता जनता पर, समय था मोंगल शाही का ।
रोज बहाते खून की दरिया, राजे रूप कसाई का ।''

लेकिन इन हालातों में भी नानकजी ने लोगोंको जो मार्ग दिखाया इसमें तारासिंहजी लिखते है :-

उंच नीच का भेद न रखा सबको अपने गले लगाया
राम रहिम में फर्क न समझा सबमें ज्योत प्रभु की जानी

और समाजाभिमुख भावनाओं से अवगत कराया

तारासिंहजी की शाहिरी में मुख्य रूप से देश प्रेम जगह जगह पर दिखता है । देश के लिये जिन्होने बलिदान दिया उनकी कहानियाँ कविता के माध्यम से बताना उनका मुख्य लक्ष्य नजर आता हैं लेकिन उनकी कहानियाँ सिर्फ लक्ष्य बयान नही करती । उनके माध्यम से जनचेतना का कार्य भी करती हैं । शहिदों पर, वीर पुरुषों पर लिखे गये गीतों में एक समाजाभिमुख संदेश दिखता है । जो वाचक को अंतर्मुख कर देगा । सोचने पर विवश करेगा । देश के प्रति हमारे दायित्व के लिये प्रेरित करेगा ।

शहिदों की आत्मा क्या कहती है इस संदर्भ में तारासिंहजी लिखते है

मिल गई आजादी तुम्हें तो इतना तो ना इतरा जरा ।
कभी सोचा है तुमने कितनो ने यहां पर सिर धरा ।

बहुत सरल शब्दों में उन्होंने चेताया है कि आजादी पर इतना गुमान ना कर जरा सोच की इसके लिये कितनों ने बलिदान दिया है **इसी** कविता मैं आगे वह लिखते है

कभी देखा है उनको, जो दाने के लिये मोहताज है ।
रहने को ना है झोपडी कपडा न ढकने को लाज है ।।

इन पंक्तियों से वे आज के हालात की खबर भी लेते है और हमारे दायित्व के प्रति हमें सजग भी करते है ।

समाज, घर परिवार के सदस्यों से बनता है उसमें माँ महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व है जिसके बगैर पूरी कायनात अधूरी हैं । **''माँ की यादें''** उनकी महत्त्वपूर्ण कविता हैं और उनके प्रति अपनी भावना बहुत ही सरल लेकिन हृदयस्पर्शी शब्दों में वर्णित करते है ।

माँ जब याद तुम्हारी आती है इक हूक कलेजे होती है ।
दिल को तो काबू कर लेता पर अखियाँ छम छम रोती हैं ।।

छम छम रोना एक अदभुत मिसाल है । इसी तरह वो अन्य रिश्ते **आँचल** के रूप में वर्णित करते है । उनके शब्दों की ताकत उनकी भावनाओं को सहज ही अंतरात्मा तक पहुँचाती है ।

देश प्रेम, शहीदों की गाथाएँ, माँ की यादें, रिश्ते नाते आदि के साथ समाज के व्यसनाधीनता पर भी कटाक्ष करना नही छोडते और साथ में उनसे प्रार्थना भी करते है की, **''भगवान का वासता है तुझे पीना छोड अपनी जिंदगी से प्यार कर । तथा अपने परिवार को हसते खेलते आबाद कर ।।''**

तारासिंह को देश में हो रहे आतंकी हमलों की भी चिंता है । आतंकवाद, दहशतवाद, अलगाववाद आदि हालातों से वे बेखबर नही है । उसपर उन्होंने हालात का जायजा लिया है और बहुत सधे हुए शब्दों में नौजवानों का आव्हान भी किया इसका प्रभाव निश्चित ही होना है । **मुशरफ को चेतावनी, उठो हिंद के नौजवानों दुश्मन तुम्हे ललकार रहा है ।** ये दो कविताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण है और साथ ही हमारी शक्ती का बयान कीया है ।

फौलाद का नाम है भारत, जाने दुनिया सारी ।

इर तरह की पंक्तियाँ संपूर्ण विश्व को हमारे इरादों के बारे में चेतावनी भी देती है ।

हमारे देश की परंपरा है धर्मगुरू, संत, साहित्यिक समाजसेवको द्वारा विश्व के पटल पर भारत का एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया गया है । उसे अबाधित रखने हेतू आज जरुरत है कुछ करने की इसलिये तारासिंह जी शाहिरों को आवाहान करते है ।

उठ जाग शाहीरा सोड निराशा आज गरज तुझी देशाला

इस शाहिरी में, जो उन्होंने मराठी में लिखी है मुझे व्यक्तिगत रूप से

प्रभावित किया है वे लिखते है

घेऊन लेखणी खड्ग तू हाती, कर घाव मानवी मर्मस्थान
जागा होईल तेंव्हा प्रत्येक तरुण, जागा होईल तेंव्हा हिंदुस्थान

और ये बताते हुए शाहिरों को आवाहन करते है की

कंबर बांधूनी उठ तू शाहीरा, जनतेचा स्वाभिमान जागा कर
वीर रसाचे गाऊन पोवाडे, आमचा तू इमान जागा कर

समाज जागृती के लिये शाहीर और शाहिरी कितनी महत्त्व रखती है इसका एक उदाहरण तारासिंहजी है । मैं उनके इस प्रयास को सलाम करते हुए उन्हें शुभकामनाये प्रदान करता हूँ ।

धन्यवाद

डॉ. नीलकांत कुलसंगे,
एम.बी.बी.एस., एम.ए., एम.एफ.ए.,
पी.एच.डी., डी.लिट.

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	कथा	पान नं.
१.	उठ, जाग शाहीरा सोड निराशा आज गरज तुझी देशाला	११
२.	गुरूनानक की अमर कहानी	१३
३.	गुरू चरणों में श्रद्धा के फूल	१५
४.	सरहंद का साका	१६
५.	भारतीय जवानों की ओरसे तारासिंघ गोरोवाडा की मुशर्रफ को चेतावनी	१९
६.	शहीद की आत्मा क्या कहती है	२१
७.	उठो हिंदके नौजवानों, दुश्मन तुम्हें ललकार रहा है।	२३
८.	मत ललकारो भूल कर भी भारत की तुम मर्दानी को (कारगील)	२५
९.	हम एक है हम एक है	२७
१०.	माँ की यादें	३०
११.	आंचल	३२
१२.	सिगारेट बोल उठी	३४
१३.	इन्सान को	३७
१४.	जिने नाज है कौम पर वो कहां है।	३९
१५.	गाओ प्यार का आज मिलकर तराना ।	४१
१६.	भारतीय जवानों के प्रति आभार	४३

शक्ति मिल जाये तो इन्सान बदल जाता है ।
भक्ति मिल जाये तो भगवान बदल जाता है ।
भाग्य दुर्भाग्य की बात अलग है वर्ना
प्यार मिल जाये तो, शैतान बदल जाता है ।
इसी लिये तो कहता हूं :-
प्यार जिंदगी का शिखर है, चढ कर तो जरा देखलो ।
क्या रंग लाती है जिंदगी प्यार करके तो जरा देखलो ।।

***

काम धंधे मै बहुत करूँ शायरी भी मेरा काम ।
जनता का मैं तुच्छसे कहूँ तारासिंघ मेरा नाम ।।

इस पुस्तक का प्रकाशन

श्री. संजयजी देवतळे

(माननीय मंत्री पर्यावरण और सांस्कृति कार्य महाराष्ट्र राज्य)

इनके शुभ करकमलो किया गया ।

पहला मराठी शाहिरी संमेलन २०११ पूना में
दिनांक शनिवार ३१ दिसंबर २०११ को हुआ ।

शाहीर योगेश नगरी, साने गुरुजी स्मारक पूना ३० इस स्थान पर हुआ ।

ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला

वीर भूमी ही भारतमाता, वंदन करितो झुकवून माथा
जन्मभूमी ही साधू-वीरांची, जग गाते ज्याची गौरव गाथा
आज काय अवस्था या देशाची, शाहीरा ऐक सांगतो खरी
सुजलाम् सुफलाम् देश हा आपुला, आज दारिद्र्याच्या दरी
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला.

स्वार्थपणा आणि हटवादाने, संप चालले चहूकडे
कुठे जाळपोळ, कुठे लुटालूट, राष्ट्र झाले खिळखिळे
शत्रु राष्ट्र टपून बसले, मातृभूमी ही गिळण्याला
वाली दिसे न कोणी मजला, सर्व नेते देश पिळण्याला
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला.

दिल्ली ते गल्लीपर्यंत पसरला चहू फेर काळा बाजार
भ्रष्टाचाराची कीड लागली, सरकारी खात्याला आजार
पुढारी दिसे अजीर्ण झालेला, जनता मात्र उपाशी पोट
सरकारी उद्योग देई न नफा, दिवसेंदिवस वाढती खोट
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला.

ओळख भविष्य पाय पाहूनी, आज तान्ह्या बाळाचा
वेळीच पाऊल उचल तू शाहीरा, रोख पाहूनी काळाचा
निघुनी गेले परत न येते जसे तीर कमानांचे
दृढ मने कर देऊनी स्फूर्ती, भेकडवृत्ती जवानांचे
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला.

पुनर्जीवन दे आज तरुणांना, जागृत कर चैतन्य विचार
नष्ट करून टाक लाच-लाचारी, नामर्दीचे जुने आजार
अविष्कार कर नवीन मानव, त्याचे हाती देऊन अवजार
तू मान बिंदू देशाचा शाहीरा, जीवंत कर मानव अवतार
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला

घेऊन लेखणी खड्ग तू हाती, कर घाव मानवी मर्मस्थान
जागा होईल तेंव्हा प्रत्येक तरुण, जागा होईल तेंव्हा हिंदुस्थान
तेंव्हाच सरस्वती पुत्र खरा तू, तेंव्हाच तू देशाचा आधार
खवळून उठेल जेंव्हा जनशक्ती तेंव्हाच होईल देशाचा उद्धार
ऊठ, जाग शाहीरा सोड निराशा, आज गरज तुझी देशाला

कंबर बांधूनी उठ तू शाहीरा, जनतेचा स्वाभिमान जागा कर
वीर रसाचे गाऊन पोवाडे, आमचा तू इमान जागा कर
हृदयात बसला कुणी कोपऱ्या, आमचा तू भगवान जागा कर
निरुत्साही होऊन बसला, आज तू हिंदुस्थान जागा कर
आज तारासिंघ हेच सांगे, आमचा तू स्वाभिमान जागा कर
स्वाभिमान जागा कर, स्वाभिमान जागा कर.

* * *

गुरूनानक की अमर कहानी

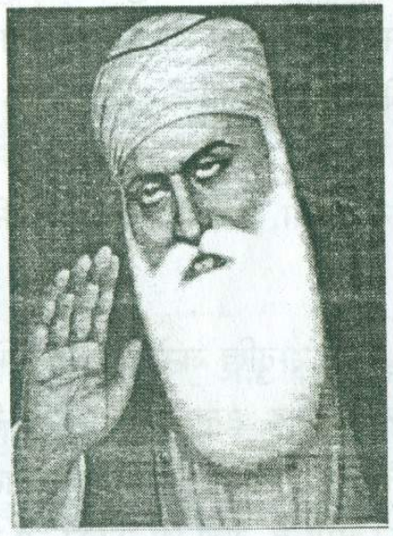

सुनो सुनो मेरे देश वासियो, गुरूनानक की अमर कहानी
सदा हृदय में नाम प्रभु का, और जुबां पर प्रेम की वाणी ।।

तलवंडी पंजाब देश में, इक बालक ने जन्म लिया ।
मात पिता ने बडे चावसे, नानक उसका नाम दिया ।
बचपन में ही लीन प्रभु में, राम नाम का मोती पाया ।
पाठशाला में जा मुल्ला को, अलिफ का अल्ला अर्थ बताया ।

सुबहा शाम मित्रों को लेकर, जा ईश्वर का नाम ध्याया ।
जात-पात का भेद न रखा, सब में ज्योत प्रभु की जानी ।।
सुनो सुनो मेरे.....

बडा जुल्म होता जनता पर, समय था मोगल शाही का ।
रोज बहाते खून के दरिया, राजे रूप कसाई का ।

पंडित पूजा भूल चुके थे, धरम से नाता तोड चुके थे ।
भूल चुके कर्तव्य बादशाह, जनता से मुख मोड चुके थे ।
ऐसे समय में आ नानकने, उनको था कर्तव्य जताया ।
भूले भटके जो राही थे, उनको मुक्ति मार्ग बताया ।
ऊंच नीच का भेद न रखा, सब को अपने गले लगाया ।
राम रहिम में फर्क न समझा, सब में ज्योत प्रभु की जानी
सुनों सुनो मेरे.....

फिरकर चारों दिशा उन्होंने, दुखि जनों का कष्ट मिटाया ।
गोल फिराकर मक्का मस्जिद, अल्ला चारों तरफ दिखाया ।
की वार्ता ऋषी मुनियों से, उनके दिल का भ्रम मिटाया ।
कण कण में भगवान बसा है, यही था उनको जा समझाया ।
मंदिर मस्जिद गुरूद्वारा, और चर्च को एक बताया ।
सब जीवों में है अंश उसीका, हर इक में है राम समाया ।
सन्यास धारणा सर मुंडाना, इन सब को था व्यर्थ बताया ।
गृहस्थी में भी प्रभु है मिलता, यही सदा थी इनकी वाणी ।
सुनों सुनो मेरे.....

* * *

गुरू चरणो में श्रद्धा के फूल

ज्ञानहीनों को ज्ञान दिया आपने, और दिया विद्या का दान ।
धन्य धन्य मेरे गुरूजनो, तुम्हें लाख लाख प्रणाम ।

जो फर्ज समझ कर संस्कार दिये, हम उन्हें भुला सकते नही ।
बरस तो क्या? उमर भर हम, ये कर्ज चुका सकते नहीं ।

कईयोंने उडारी भरी गगन मे, कई बने है व्यापारी ।
कई शासन सन्मान प्राप्त हैं, कई बने है अधिकारी ।

आप की कृपा का फल है ये, जो संसार का हम सुख हैं पाते ।
धर्म मार्ग पर कई है लग गये, जो प्रभु के, गुण है गाते ।

धन्य है वो शिष्य तुम्हारे, संयोग जिन्होने बनाये है ।
भुले भटके गुरू बंधुओं के, और गुरू के दरस कराये है ।

तारासिंघ इन शब्द सुमनों को, गुरू चरणों पर धरता है ।
सदा मिले आशिर्वाद तुम्हारा, कामना यही ही करता है ।

* * *

सरहंद का साका

(यह गीत उन शहीदों को समर्पित है जिन शहीदों ने देश की आन और धर्म की शान के लिए अपने आपको कुर्बान कर दिया ।)

मैं पेश कर रहा हूं ये *साका कमाल का ।
दशमेश के दुलारों का सुंदरी के लाल का ।
भारत में उस जमाने में औरंग का राज था ।
दिल्ली का तख्तो ताज भी उनके ही हाथ था ।
महजब के नाम पर वो करता जुल्म था बडा ।
इन्सान के वो रूप में शैतान था खडा ।
मुगलों दे आज देश में आतंक फैला दिया ।
गोबिंद सिंघ को पकडलाने का ऐलान था किया ।
उसके कुटुंब को उसे जो पकड लायेगा ।
रूतबे के साथ साथ ही इनाम पायेगा ।

---

* साका = कहानी

लालच में आज गंगु ने था जुल्म ढा दिया ।
फत्तेह सिंघ जोरावार को बंदी बना दिया ।
लाये दोनों जब कचहरी में बंदी के रूप में ।
ऐसे चमक रहे थे जैसे मोती धूप में ।
चेहरे पे उनके नूर था लाली दमक रही ।
मानो अंधेरी रात में बिजली चमक रही ।
आते उन्होने जोर से थी फतेह बुलाई ।
अपने जोशिले नारो से कचेरी हिलाई ।
सुन कर जोशिले नारो को सब दंग हो गये ।
बैठे थे जिन रंगो में वो सब भंग हो गये ।

बच्चों को आया देख कर काजीने यों कहा ।
करलो कबूल दीन को सिखी में क्या पडा ?
लेना तुम्हें क्या धर्म से अंजान हो अभी ।
करलो कबूल दोनों ही इस्लाम को अभी ।
बन जाओ मुस्लमान तख्तो ताज मिलेगा ।
सुखों की जिंदगी का, सारा *साज मिलेगा ।
कहना न मेरा माना तो तुम मौत पाओगे ।
जिंदा दिवारों में अभी *चिनाये जाओगे ।
नन्नी उमर ये जान कर मैं तरस खा दिया ।
कब से तुम्हें यमलोक में, होता पहुँचा दिया ।

---

*चिनाये = जिंदा दीवार में गाडना

* साज = साधन

बस कर बच्चों नें कहा, काजी को जोर से ।
लानत है, ऐसी जिंदगी, धरम को छोड के ।
सिखी हमारी जान है, सिखी ही शान है ।
सिखी ही तख्तो ताज और सिखी ईमान है ।
जिंदा चिनाओ दिवार में या सर को काट दो ।
करो देह की बोटी बोटी और शेरों में बांट दो ।
इस मौत का न डर दिखा, दिवाने इस के हम ।
शमा हमारी मौत है, परवाने इस के हम ।
जब तक रगो में खून है, सिखी निभायेगे ।
करले तू कितने जुल्म भी, सर न झुकायेंगे ।

सुन कर जबाब बच्चों का, आया हंकार में ।
दिल में खुदा का खौफ ना, काजी मक्कार में ।
उन बच्चों पर उस मौत का, फतवा लगा दिया ।
सरहंद की दिवारों में, जिन्दा चिना दिया ।
हो गये शहीद कौम के, लिये वो दो कुमार ।
कुर्बानियों से कौम में, है आ गई बहार ।
हो कर शहीद कौम की, वो शान कर गये ।
सदियों की मुर्दा कौम में, थे जान भर गये ।
ऐसे शहीदों पर ही, देश करता मान है ।
'जाचक' भी बार बार, उन्हें करता प्रणाम है ।

* * *

भारतीय जवानों की तरफ से
तारासिंघ गोरोवाडा की मुशर्फ को चेतावनी

भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपई का इस गीत के लिये आशीर्वाद पत्र और मिली ।

(श्री. उद्धव ठाकरेजी की ओरसे सरदार तारासिंघ गोरोवाडा भवानी तलवार भेट देते हुअे)

बार बार कहता हूँ मुशर्फ, सुन लो मेरी बात ।
पीठ पीछे तुम छुरा भोकना, छोड दो तुम ये घात ।।

यह सच है हम भारतवासी, करें न किस पर जोर ।
इसका मतलब ये न समझना, भारत है कमजोर ।।

फौलाद का दूसरा नाम है भारत, जाने दुनिया सारी ।
सोये शेर को जगा रहा है, क्यों तेरी मति मारी ।।

वीर बहादूर सिकंदर जैसे, लौट गये सुलतान ।
काश्मीर पर छुपे हमले करना, छोड दो पाकिस्तान ।।

मर्दों की औलाद जो होती, करती जो दो-दो हाथ ।
मुर्दों की औलाद जो होती, छिपकर वह करें वो घात ।।

निकाल दो पाकि धोखे का बुरखा, जान जाये जग सारा।
आ जाओ मैदान के अंदर, बजाकर युद्ध नगारा ।।

फिर देखो पंजाब का योद्धा, कैसा आग का गोला ।
जब जान हथेली पर रख निकले, बन जाता है शोला ।।

महाराणा प्रताप की यहाँ पर, रहती है संतान ।
देश की खातिर मर मिटना ही, यही है इनकी शान ।।

दख्खन का मराठा जो है, जब युद्ध में आकर डटता ।
कोई ताकत उसे हिला न सकती, मर कर पीछे हटता ।।

ऐसे भारत के सपूत है, देश के हैं दिवाने ।
सिर पर कफन पर बाँधे फिरते हैं, आजादी के परवाने ।।

काश्मीर हमारा अभिन्न अंग है, जान लो पाकिस्तान ।
जान जायें पर वचन निभाये, यही हमारी शान ।।

निकले जब भारत के सैनिक, दिल में युद्ध की ठान ।
रोक सके न कोई इन्हें शक्ति, आँधी या तुफान ।।

'तारासिंघ' तुम्हें चेतावनी देता, सोच लो पाकिस्तान ।
बना न दे ये हिंदोस्तानी, तुम्हारा कब्रस्तान ।।

ये भी हो सकता है मिटा दें, दुनियां से पाकि नाम ।
या दोनों को मिला के कर दें, अखंड हिंदोस्तान ।।

* * *

शहीद की आत्मा क्या कहती है

गए थे एक दिन सैर को, दिल में कुछ अरमान थे ।
एक तरफ शहीद स्तंभ थे, एक तरफ शमशान थे ।
तभी एक आवाज स्तंभ से, यूं आने लगी । क्या?
होश कर के चल जरा, हम भी कभी इन्सान थे ।

मिल गयी आजादी तुम्हें तो, इतना तो ना इतरा जरा ।
कभी सोचा है तुमने, कितनों न यहाँ पर सिर धरा ।
कितनों ने खाई सीनों पर, गोलियों की मार है ?
कितनें शरीरों की बन गयी, मांस पेशियों की तार है ।

क्या, इसलिए शहीद, भगतसिंघ फाँसी के तख्ते पर चढे ?
क्या, इसलिए सुभाषचंद्र बोस आजादी के रण में अढे ?
क्या, इसलिए झाँसी की रानीने उठाई तलवार थी ?
क्या, इसलिये सावरकर ने जेल काटी कई बार थी ?

कि तुम आजादी का गैर फायदा, उठाकर गुलछर्रे उडाते रहो ।
कई भूख से मरते रहें, तुम अपने घरों कों सजाते रहो ।
कभी देखा है उनको, जो दाने के लिए मोहताज है ।
रहने को ना है झोपडी, कपडा ना ढकने को लाज है ।

जाओ लौट जाओ इन, मजारों पे फूल चढाओ नहीं ।
कभी भूलकर भी लौटकर, यहाँ पर आओ नहीं ।
हम नहीं चाहते तुम हमारी, समाधी पे फूल चढाते रहो ।
न चाहते हैं हर साल हमारी, समाधी पर मेले लगाते रहो ।

दे दी थी हमने जान, इस जुल्म को मिटाने के लिए ।
हर एक को रोटी मिले, घर मिले सर छुपाने के लिए ।
हर एक को इज्जत मिले, ना भेद हो जात-पात का ।
हर घर में खुशी के दीप जलें, न फर्क हो दिन-रात का ।

अगर आना है तो पहले, इन घरों को खुशियों से भर दो ।
जो निकाले जा रहे समाज से, पहले उनके दिलों को हर लो ।
यही हमारी भेंट हैं, यही हमारा मान है ।
यही श्रद्धांजली है, यही हमारी शान है ।।

* * *

उठो हिंदके नौ जवानो, दुश्मन तुम्हे ललकार रहा

उठो हिंदके नौ जवानो, दुश्मन तुम्हे ललकार रहा ।
संकट में है देश तुम्हारा, आज फर्ज तुम्हे पुकार रहा ।

भारत देश के तुम सैनानी, सदा देश को तुम पर मान ।
भटक रहे हो क्यो मार्ग से, गति विधियों से हो अंजान ।।
पाक द्वारा देखो देश को, दहशतवाद ने घेरा है ।
हर गली और हर शहर में, आतंकवाद का डेरा है ।।

कही पे जाली नोटों द्वारा, करे खोखली अर्थ प्रणाली ।
मुस्लिम जवानों, को बहाकाकर, हाथ में दे बंदूक, दो नाली ।।
हाल ही में विधान सभा पर, गोली बार करवाया था ।
खत्म करने भारत के नेता, प्लॉन इसी का बनाया था ।।

दहशदवाद और अलगवाद के, बीज ये दुश्मन बो रहा ।
देखकर भी, आँख मूंद कर, आज जवान तू सो रहा ।।
हालत देख तेरे देश की, खस्ती होती जा रही ।
जीना यहांपर महंगा है, मौत, सस्ती होती जा रही ।।

भारत देश के नौजवानो, देश की बागडोर संभालो ।
देश में छिपे, जो गद्दार हैं, उनको पकडकर बाहर निकालो ।।
कब तक सहते रहोगे अपने, बहन भाइयोंका ये अपमान ।
भूल गया क्या गौरव अपना? भूल गया क्या देश सन्मान?।।

आक्रमण करने जो भी आया, मुख उसका तुमने मोड दिया ।
खून बहाकर अपना तुमने, शहींदोमें, नाम जोड दिया ।।
सुखी देशकी जनता रखने, अपना दुख तू भूल गया ।
देश की, आजादी खातिर, फांसीपर तू झूल गया ।।

देश का गौरव बन कर निखरो, अपना आज इतिहास दोहरादो ।
सर पर कफन बांधकर निकलो, फिर से अपना खून बहादो ।।
सात पीडियों तक पछताये, ऐसा पाकि को सबक सिखा दो ।
करदो जान न्यौच्छावर देशपर, मां के दूध का, कर्ज चुका दो ।।
मां के दूध का कर्ज चुका दो ।।

* * *

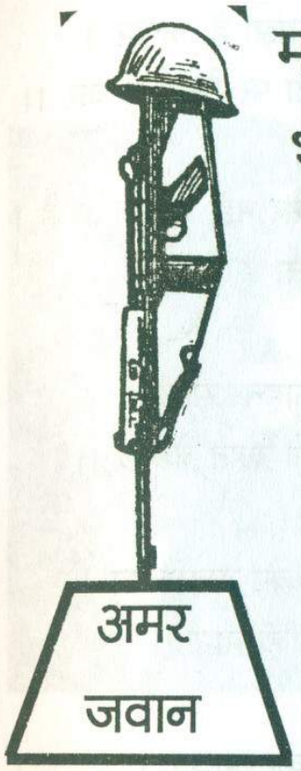

मत ललकारो भूल कर भी भारत की तुम मर्दानी को (कारगील)

बहुत सह लिया अब तक हमने, पाक तुम्हारी नादानी को ।
मत ललकारो भूल कर भी, भारत की तुम मर्दानी को ।।

गोबिंद सिंघ के हम अनुयायी, भारत मां की हैं संतान ।
निहत्थे पर कभी वार न करना, हमें संस्कृति देती है ज्ञान ।।

ये देश नानक शिवराया का, यहां प्यार का संगम होता है ।
जो ललकारे इस मातृभूमि को, वो सदा कबर में सोता है ।।

शांत वृती और साधु स्वभाव को, तुमने समझा है लाचार ।
छ: जवानों के टुकडे कर के, तुमने मानवता पर किया है वार ।।

पाकिस्तान, शेरकी खाल पहन कर कोई, शेर नही बन जाता है ।
शेर वही कहलाता है, जो शेरे दिल को पाता है ।।

भूल गया लगता है अब तू, पैंस्ट और एकाहत्तर साल ।
जब भारत सेना ने किया था, युद्ध में तुमको बहुत बेहाल ।।

हमारे जनावों ने बना दिया था तुम्हारे टेकों का कबरस्तान ।
याद रख कहीं मिटा न दें तुम्हारा दुनियां से ही नाम ।।

सहानभुति न चीन की चाहते न अमरीकी का आधार ।
है जोश बाजुओं में हमारे, खींच लेंगे अपना अधिकार ।।

तोप गोलियों से न डराओ, भारत के तुम दिवानों को ।
खुद मौत सलाम करती है इन, आजादी के परवानों को ।।

नवाब शरीफ तुम्हें समझाता, बुरी नजर न देखो हिंदुस्तान ।
भारतीय जवान बना न दे पाकिस्तान का कबरस्तान ।।

* * *

भिन्न भिन्न हम भाषावाले,
पर धर्म हमारा एक है ।।
प्रांत हमारे भले अलग हों
पर देश हमारा एक है ।।
हम एक है हम एक हैं ।।

गोबिंद सिंघ के हम सपूत हैं ।
राणा प्रताप के अनुयायी ।।
शिव शक्ति के हम है अराधक ।
सिख मराठा भाई भाई ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

हिंदु धर्म के हम है पुजारी ।
धर्म ही आन और शान हमारी ।।
मर मिटे जिस धर्म की खातिर ।
पूर्वज हमारे अनेक हैं ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

हम हिंदु हिंदु धर्म हमारा ।
प्राणों से भी हमें है प्यारा ।।
रक्षा करना फरज हमारा ।
गूंज उठा है आकाश है सारा ।।
हम एक है हम एक हैं ।।

अब न सुनेगे धर्मांतर का ।
भेदभाव ये देशांतर का ।।
अब अंत आ गया इन बातों का ।
ये जुबां हमारी एक है ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

धर्म के लिये हम मर सकते हैं ।
जान हथेली पर धर सकते हैं ।।
जाग उठा है युवक देश का ।
प्रतिज्ञा सभी की एक है ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

सावधान मेरे देश के दुश्मन ।
सुनलो ये ऐलान हमारा ।।
छोड दो तुम ये देश गद्दारी ।
आज हमारा एक ही नारा ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

ध्यान से सुन लो बात हमारी ।
ये शोला न बन जायें इन्गारी ।।
भडक उठी है जनता सारी ।
आवाज सभी की एक है ।।
हम एक हैं हम एक हैं ।।

* * *

माँ की यादें

माँ जब याद तुम्हारी आती है ।
इक हूक कलेजे होती है ।
दिल को तो काबू कर लेता ।
पर अखियाँ छमछम रोती हैं ।।

माँ अब कहाँ मिलेगा वो हाथ तेरा ।
जो प्यार से सिर पर धरती थी ।
दु:खों के पर्वत जब गिरते ।
आंचल में छिपाया करती थी ।।

आज याद आता वो दुलार तेरा ।
झिडकों में छिपा वो प्यार तेरा ।
तू रूठ गई है क्या मुझ से ।
आज रूठ गया संसार तेरा ।।

माँ माफ करना उन गुनाहों को ।
जो जाने अनजाने किये तुम पर ।
उस प्यार की ठंडक अब समझी ।
जब प्यार वो मुझ से दूर हुआ ।।

अब याद संजोये रखता हूँ ।
इस के सिवा कोई चारा नहीं ।
भगवान सिवा इस दुनिया में ।
अब मेरा कोई सहारा नहीं ।

माँ हिंमत दे इस दुनिया में ।
रोशन तुम्हारा नाम करूँ ।
नाशवंत इस देही को ।
देश कौम पर बलिदान करूँ ।

* * *

तू क्या रूठी माँ
आज रूठ गया जमाना ।
कल ही तो थी हकीकत
आज बन गया फसाना ।।

* * *

आंचल

(स्त्री के हर रिश्ते को आंचल का नाम दिया है ।)

ये मैं नहीं कहता, आंचल की ख्याती है ।
कभी प्यार की छांव बनी, कभी दीपक की बाती है ।
कभी साजन की बन सजनी, जिंदगीऽऽ सवारी है ।
कभी लला की बन लोरी, रात अखियों में गुजारी है ।
ये मैं नही कहता आंचल की ख्याती है ।

कृष्णभय्या के जख्मों पर, आंचल कभी दवा बनी ।
कभी आंचल में बंधी सबजी, कभी पंखे की हवा बनी ।
परिवार की खुशी खातिर, आंचल कभी दुआ बनी ।
ये मैं नहीं कहता आंचल की ख्याती है ।

इस आंचल ने शोलोसे, कईबार, घर को बचाया है ।
कंधे से कंधे को मिला, इमलो को चढाया है ।
जब उतर गया आंचल देहसे, महाभारत रचाया है ।
ये मैं नही कहता आंचल की ख्याती है ।

सावित्री के प्यारसे, यम का दिल भी डोल गया ।
दूधो नहाओ, पूतो फलो, यममुख से बोल गया ।

सत्यवान की जीवन ज्योत को अपने हाथो से यम खोल गया ।
ये मैं नही कहता आंचल की ख्याती है ।

सिरपर बैठकर आंचलने, बुजुर्गो का है मान किया ।
उर पर बैठ कर आंचल ने सजना का सन्मान किया ।
जब बहका आंचल गृहस्थीमें, मां का था वरदान लिया ।

जब उग्ररूप धारा आंचल ने दुर्योधन का था काल बना ।
सीता का आंचल जब पकडा, वो रावण का जंजाल बना ।
कपटीदुष्ट राहूकेतू का, आंचल ही कर्दन काल बना ।
ये मैं नही कहता आंचल की ख्याती है ।

लिखी जाये न आंचल की महिमा, राणी पद्मणीका जोहार बना ।
झांसी की राणी का आंचल, रणभूमि में तलवार बना ।
मुक्तसरके जंग में माईभागो का, आंचल घोडे स्वार बना ।
ये मैं नही कहता आंचल की ख्याती है ।

नईनवेली दुल्हन का रहा सदा शृंगार है आंचल ।
सप्तपदी में दो दिलों का, बंधन और आधार है आंचल ।
जीवन की पतझड मे हमेशा, लाया सदा बहार है आंचल ।

क्या क्या ब्यान करू मैं महिमा, आंचल सा कोई और नही ।
करूनामय का है ये सागर, इसका कोई छोर नही ।
कर्तव्य स्फूर्ति, दयाकीगाथा, सुन गरदन मेरी झुक गई ।
असमर्थ जान अपने को तारासिंघ, कलम लिखते लिखते रूक गई ।

* * *

सिगारेट बोल उठी

(जब एक दोस्त अपने दूसरे दोस्त को कह कहकर थक गया,
सिगारेट छोड दो, सिगारेट छोड दो । परंतु सिगारेट के प्रेमी ने
सिगारेट ना छोडी, ये देखकर सिगारेट को ही शरम आने लगी,
तब वें तिल मिलाकर बोल उठी।)

ए मुझे पीने वाले कुछ शरम कर,
अपने ऊपर नही तो अपने
बच्चो वर ही तरस कर ।
आज तू मुझको पीता है,
कल मै तुझे पी जाऊंगी ।
तुम्हारे शरीर में कैंसर,
बन कर मैं छा जाऊंगी ।
क्यों घुट घुट कर मरना चाहता है ?
कुछ तो समझ कर
स्वयंपर नही तो अपने माता पिता परही
कुछ तरस कर ।

मै गले और फैफडों को,
घुन की तरह खा जाऊँगी ।
तू खाने पीने को तरसेगा,
पर तुम्हारे गले से कुछ नही उतरेगा ।

मैं इस तरह छा जाऊंगी ।
डॉक्टरों के पास तू दिन रात धक्के खायेगा,
फिर भी मेरा पीछा ना छूट पायेगा ।
अगर जिंदगी जीना है तो मुझे छोड दे,
नही तो मैं तुझे बहुत तडफाऊंगी ।

तेरे पीछे तेरे घर वाले, हस्पतालोंमें चक्करे लगायेंगे ।
कर्जा ले लेकर तेरा इलाज करायेंगे,
हस्ते खेलते तेरे मासूम बच्चे मुरझा जायेंगे ।

तेरे बुजुर्ग माता पिता, ये सदमा न सह पायेंगे ।
अपना नही तो इनकी जिंदगी का खयाल कर,
भगवान का वास्ता मुझे पीना छोड,
अपनी जिंदगी से प्यार कर ।

तेरे लिये सांस लेना भी कठिन होगा ।
ऑक्सिजन सिलेंडरों पर ही, तुझे जीना होगा ।
तुम्हारे घरवाले तुझे बचाने खातिर, बरबाद हो जायेगा ।

तू पल पल मौत को तरसेगा,
पर मौत भी तुझे जल्दी नही ले जायेगी ।
तेरे बच्चे यतीमो की तरह फिरते रहेंगे,
बीवी तेरी विधवा हो जायेगी ।

तेरे बीवी बच्चो, माँ-बाप को कौन खिलायगा?
तेरे बच्चे का स्कूल खर्च कौन उठायेगा?
अपने पर नही इन बच्चों की, जिंदगी पर तरस कर,
सिगरट के धुए से समाज की, सेहत को न कष्ट कर ।

लोगों की सेहत का खयाल कर
अपने घर की संभालकर, सुखो की भालकर
जब तुम मुझे अपने बच्चो के पास, बैठ कर पीते हो ।
तो मैं धुअें के रूप में सांसो द्वारा, उनके अंदर चली जाती हूं,

और कैंसर बनकर, अंदर छा जाती हूं ।
तू अपने बच्चों की मौत का, कारण क्यो बनता है?
क्या वो भी तडप तडप कर मर जाये, सह पायेगा?

भगवान का वास्ता है, मुझे पीना छोड,
और अपनी जिंदगी से प्यार कर,
तथा अपने परिवार को हंसते खेलते आबाद कर ।

* * *

इन्सान को

ए खुदा के, नेक बंदे, बंद कर दे तू, खेल ये गंदे ।
ए भगवान के प्यारे बंदे, बंद कर दे तू, खेल ये गंदे ।।
क्यों नफरत की आग बढाता, निरदोशोंका खून बहाता ।
बंम विस्फोट है कहीं करता, अग्निकांड है कही रचाता ।।
ये मानव तेरा काम नहीं है, इस में कोई नाम नहीं है ।

बस्स! बंद करो नफरत की बाते, खत्म करो दुश्मननी के नाते ।
कहीं न हो अंधियारी रातें, सभी ओर हो प्यार की बातें ।।
कही न हो गम का अंधियारा, चारों ओर हो खुशी उजियारा ।
अब न दिखे मुरझाया चेहरा, खुशियों का अब लाओ सवेरा ।।

क्योंकि
खुदाकी है सभीही संतान, सब का है एकही भगवान ।
अल्ला, गॉड, भगवान एक है । सब धर्मों का फरमान एक है ।।
हिंदु-मुस्लिम जात नहीं है, ऊंच नीच की बात नहीं है ।
राम रहिम में फरक न जानो, सब धर्मो को एक ही मानो ।।

न धूप सूरज की मोमिन जाने, न चांद की रोशनी हिंदु पहचाने ।
धरती मां अनाज जो देती । उस में किसी का नाम न लेती ।।
सरपर सब के गगन एक है, भारत सब का चमन एक है ।
फिर क्यों मन में भेदभाव है, दिलों में क्यों फिर मन मुटाव है ।।

खुदा ने बनाये सभी इन्सान, तुम क्यों बना रहे शैतान ।
सब काया में खून लाल है, फिर क्यों खडा किया बवाल है ।।
बस्स करो ! महजब पे लडना, भाई भाई में झगडा करना ।
मानवता का खून बहाना, भगवान के नाम पे कलंक लगाना ।।

इन्सान का बस ना चले दातार, दीन दुखियों की सुनो पुकार ।
कल युग के हाथो ने जकडा, मानव धर्ममार्ग से उखडा ।।
भूल गया है फर्ज ये अपना, देख खुशियों का झूठा सपना ।
इनके गुनाह को, माफ तू कर दे, दया प्रेम से झोली भर दे ।।

दे मालिक, ऐसा वरदान, सारे जग का हो कल्याण ।
तू ही पालनहार खिवैय्या, डूब रही है धर्म की नय्या ।।
आकर इसे तू पार लगा दे, शैतानों को इन्सान बना दे ।
करो कोई मालिक, ऐसा चमत्कार, जुल्म का बंद हो, कारोबार ।।
जुल्म का बंद हो, कारोबार ।।

* * *

जिने नाज है कौम पर वो कहां हैं ?

गुमराह हुए इन्सां को तो देखो
ये बिखरे हुए गुलिस्ता को तो देखो
है करतूते काली करिश्में ये इनके
कहां है वो नेता वो लीडर कां हैं?
जिन्हें नाज है कौम पर वो कहां हैं?

ये ओहदो के झगडे हैं खुर्सी की तक्रार ।
उठती मस्जिद में लाठी है मंदिर में तलवार ।
ये होते तमाशे है बीचो बाजार ।
कहां हैं वो दरबार निगाह बान कां हैं?
जिन्हे नाज है कौम पर वो कहां हैं?

उठे कोई नेता जो इनको मिला दे ।
जो बिछडे है उन को गले से लगादे ।
ये आपस के झगडे को बंद करादे
कहां है दिवाने मस्ताने कहां हैं?
जिन्हे नाज है कौम पर वो कहां हैं?

बना न सको तो बिगाडो न उसको ।
खिला है जो गुलशन उजाडो न उसको ।
जो कौमी दिवाना है मारो न उसको ।
कहां है वो नेता वो लीडर काहां हैं?
जिन्हें नाज है कौम पर वो कहां हैं?

आओ सब मिल कर नया भारत बनाओ ।
घर बाहर के भेद, आकर मिटाओ ।
दिखाओ जमाने को इतिहास है अपना ।
साकार कर दो जो देखा था सपना ।
महका दो फुला दो ये मनव फुलवारी ।
तभी कौम जिंदा रहे गी हमारी ।

* * *

गाओ प्यार का आज मिलकर तराना

सदा खुश रहो आप आप से जमाना ।
हर इन्सान को प्यार से दिल लगाना ।
खुष रहेगा खुदा सदा ही इसी से ।
मकसद तभी होगा पूरा उत्सव का मनाना ।

जब होगी दिवाली न अपने ही मनमें ।
तो क्या फायदा है ये दीपक जलाना ।
जब प्यार का रंग न चढा हो दिलपर ।
तो बेकार है होली का रंग उडाना ।

चार दिनों का मेला है दुनियां ।
जो आया उसे हर हालत में जाना ।
फिर क्यों फंसता ऐसे फंदों में बंदे ।
जब नेकी बंदी का हिसाब है चुकाना ।

करो प्यार सब को गले से लगाओ ।
सब है अपने न कोई बेगाना ।
बुझा दो वो नफरत के दिये जो जलते ।
'जाचक' गाओ प्यार का आज मिल कर तराना ।

गीता भी वर्णन करे प्यार का ही ।
वेद और कुरान का सबक है पुराना ।
गुरु ग्रंथ साहिब भी कहते सदा ही ।
प्यार से ही झुकता खुदा और जमाना ।

* * *

भारतीय जवानोंके प्रति आभार

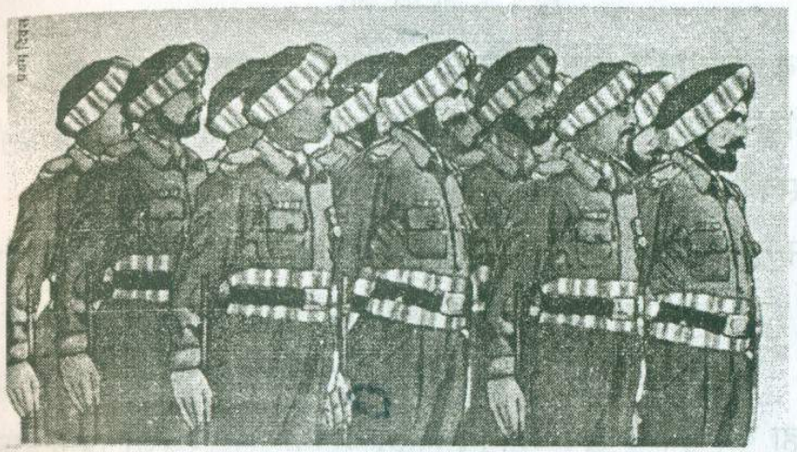

(1)

ए मेरे देश के वीर सैनिक, मैं तुम्हें शत शत प्रणाम करता हूँ
और तो कुछ नही है पास मेरे, मैं तन मन तुम पे कुर्बान करता हूं।

* * *

(2)

खुद कांटों पर चल कर तुमने, स्वयं पिये दुखों के जाम
धन्य धन्य मेरे देश के वीरों, तुम्हे लाख लाख प्रणाम ।।

* * *

(3)

देश की खातिर मरने वालो, तुम्हें दिल से भुला सकते नहीं
बरस तो क्या सदियों तक हम, ये कर्ज चुका सकते नहीं ।

* * *

जवानों में जब तलक है बूंद इक इमान की
तेग लंडन से लडेगी जाकर हिंदुस्तान की ।

* * *

तोड के पॅटन टक जवानों, तुमने अमरीका को हिला दिया ।
भारत भी किसी से कम नहीं, ये दुनियां को दिखला दिया ।।

* * *

जब जुलमीकार भुटो ने कहा हम हजार साल तक लडेंगे ।
लेकिन काश्मीर की एक इंच की जमीन भारत को नही देंगे ।।
उसका जवाब
इन दमों में दम नही, तुम खैर मांगो जान की
ए भुट्टों अब हो चुकी है जीत हिंदुस्तान की ।

* * *

बहा कर तुम ने खून अपना, जौहर दुनियां को दिखला दिया
कुचल कर अत्याचारी तुमने, मानवता का सर उठा दिया ।

* * *

ब्रिटीश हुकुमत हिलाने वाले, तुम भगतसिंग सरदार बनो ।
विदेशी चीजों को अपनाकर, देश के ना गद्दार बनो ।।

* * *

भारतवासी देश की खातीर, जान हथेली पर धर जायेंगे ।
हम पाकिस्तानी नही है जो, बात बात पर बदल जायेंगे ।।

* * *

सर झुकाकर जीनेवालो स्वाभिमान से जीना सीखो ।
देश कौम की खातिर तुम भी, शहीदी जाम को पीना सीखो ।।

* * *

दिल किसी को न देना, दिल को देना दिल ।
न मिले तो न सही, कम दिल से मत मिल ।।

* * *

जो सर दर दर पर झुक जाये, उसे सर नहीं कहते ।
जो दर सर को न झुका सके, उसे दर नहीं कहते ।।

* * *

खून बहाकर देश की खातीर उज्ज्वल किया भारत का माथा ।
कैसे भूलोगे हम उस को वो वीर तुम्हारी गाथा ।।

* * *

शक्ति मिल जाये तो इन्सान बदल जाता है ।
भक्ति मिल जाये तो भगवान बदल जाता है ।
भाग्य दुर्भाग्य की बात अलग है वर्ना
प्यार मिल जाये तो, शैतान बदल जाता है ।
इसी लिये तो कहता हूं :-
प्यार जिंदगी का शिखर है, चढ कर तो जरा देखलो ।
क्या रंग लाती है जिंदगी प्यार करके तो जरा देखलो ।।

* * *

जिंदगी में तीन चीजे महत्व रखती है :-
नो लाईफ, विदाऊट वाईफ ।
नो नालेज, विदाऊट कालेज ।
नो ऐश, विदाऊट कॅश ।

* * *

या रब तेरी बदौलत से ही, दुनियां में राज होता है ।
अगर उठ जाये नजर तेरी, तो बंद दुनियां का *काज होता है ।
लोग कहते है पैसा सब करता है, पैसा ही दुनियां का साज होता है ।
मगर पैसा न गम में, साथ देता है,

*काज = काम धंधा

इसी लिये तो, अपनों पे नाज होता है ।।

* * *

इन हजरत के क्या कहने, ये तो विद्या के आगर है ।
सरस्वती की कृपा है इन पर, ये गागर में सागर है ।।

* * *

(शिखो के पाचवें गुरु, गुरु अरजनदेव जी को अनेक कष्टोंसे उनकी ज्योत परमात्मा मे विलीन हो गई)

दुनियां के इतिहास में हमने ऐसा जुल्म न होते देखा ।
अग्नि शिखा से लाल तवे पर, अडोल बैठा संत न देखा ।।

* * *

जात न पूछो साधू की, पूछो उस का ज्ञान ।
मूल्य करो तलवार का, रहने दो म्यॉन ।।

* * *

चेहरे से दिल की हकीकत ब्याँ होती है ।
आंखे भी दिल की जुबाँ होती है ।।

* * *

मौत से किसकी यारी है ।
आज तुम्हारी कल हमारी बारी है ।।

* * *

जब तक दिल पर चोट लगे ना
अखियां नम नहीं होती
मानो या न मानो यारो
भाभी, मां से कम नहीं होती ।।

* * *

काम धंधे मै बहुत करूँ शायरी भी मेरा काम ।
जनता का मैं तुच्छसे कहूँ तारासिंघ मेरा नाम ।।

* * *

जो चट्टानों से टकराता है, उसे तुफान कहते हैं ।
जो तुफानों से टकराता है, उसे भारतीय जवान कहते हैं ।।

* * *

माना महंगाई बहुत है, बचत करना हर्ज नही ।
अरे! तालीयाँ तो बजाओ, इस में तो कोई खर्च नही ।।

* * *

संग दिल इस दुनियां में, ईमान नही मिलता ।
आदमी तो बहुत है मगर, इन्सान नहीं मिलता ।।

* * *

स्वदेशी अपना धर्म है । स्वदेशी अपना नाम ।।
सदा स्वदेशी को अपनाओं विदेशी से क्या काम?

* * *

मानव कलंक मिटाने को, यहा प्रमाण बनाये जाते है ।
भारत वर्ष सजाने को, यहां इन्सान बनाये जाते है ।।

* * *

साधु संतो के चरण जब करते गृह प्रवेश ।
यही हमारे तीज त्यौहार यही हमारे दरवेश ।।

* * *

प्राकृति का नियम अटल है, जो जन्मा उसे मरना होगा ।
राजा हो या रंक सभी को, पंच तत्व में मिलना होगा ।।

* * *

देश हमारी शक्ति है, धर्म हमारी भक्ति ।
राष्ट्र पुरुष स्फूर्ति है, स्फूर्ति के गीत हम गायेंगे ।।

* * *

नये साल का सूरज निकला ।
आशाओं का उजाला आया ।।
गम का अंधेरा खत्म हो गया ।
खुशियों का संदेश है लाया ।।

* * *

(समाप्त)